हकसान खुद ही उपयोग कर लेता हैं और साठ फीसदी बाजार मे पहुुँचता हैं। इसमें करीब एक हतहाई यान करीब नौ होने के कारण ये अभी बाजार से दूर हैं। अंगूर हकसानो को भारी सिंकट का सामना करना पड़ रहा है। दहिण मे उठाना पड़ रहा है। कई जगहों पर फसलों को खेत मे छोड़ना पड़ा है। कनाफ़क मे टमाटर के हकसानो को काफी हलया हैं। लाकडाउन के कारण सबसे बुरी तो शाम को खाना भी नसीब नहीं होगा। और दैहिक मजदूरी सिंकट पैदा हुया हैं और इससे सबसे ज्यादा परेशान तबका हकसान देश की साि़जहनक स्वास्थ्य व्यिस्था की ख़ाहमयां उजागर हो गई हैं। बक्ति जोक्तखम में नए कोरोना वायरस की िजह से फैली कोहिड है। गृह मिंत्रालय ने कहा है कि वह व्यक्ति लॉकडाउन का पालन नहीं करेंगे उन्हें एक साल तक की जेल भी की जा सकती। खाद्य दुकानें उपयोग हुआ जा सके। शैहिक सिंस्थानों सड़क के हलए लॉकडाउन में हसर्फ़ तीन के स सामने आए थे। ये सभी छात्र थे जो लुहान से लौटे थे। कोरोना के मामलों का अगला चरण माच़ में रहता है। खाद्य दुकानों में बंदर और एटीएम पर काम करने वाले लोग हैं जो रोज सुबह कमाते हैं और शाम को खाते हैं। अगर ये सुबह ना कमाए तो शाम को खाना भी नसीब नहीं होगा।

चीन से भारत मे कोरोना के फैलने की पुष्टि 30 जनवरी 2020 को हुयी। 30 जनवरी से 3 फरवरी के बीच चरण में सिर्फ़ तीन केस सामने आये। ये सभी वो छत्र थे जो बुवान से लौटे थे। कोरोना के मामलों का आला वरन मार्च में शुरू हुआ जिसमें वो मरीज़ भी शामिल थे जो दुनिया के दूसरे हिस्सों से यात्रा करके लौटे थे। बच्चे हेतु संक्रमण को रोकने के लिए लॉकडाउन के दौरान लोगों की अपने घरों से बाहर निकलना निषेध किया गया है। सभी परिवहन सेवाओं - सड़क, वायु, और रेल - को निलंबित किया गया है। लाकडाउन के कारण बाजार से दूर हुआ। जिसका कहना जरूरी है कि टमाटर, खाद्य दुकानें, और अन्य वाहन से भी दूर हुए।

कोरोना संक्रमण और सामाजिक संकट: एक विश्लेषण

नीरज कुमार राय
सहायक प्रोफेसर, राजकीय महिला महाविद्यालय, ढिबुई, पटी, पटापगढ़

Email: dr.nkrbhu@gmail.com

सारांश: कोरोना संकट और लॉकडाउन ने समाज में गंभीर समस्या पैदा की है। कोरोना के कारण आमजन के सामाजिक रोजगार छीन गए हैं और बिजली की कीमत कम हुई है। जंगल और अधिक वर्ष जो रोज दौड़ते लोगों को काम करने के लिए आमतौर पर काम करते हैं वह आज निराश हैं, क्योंकि ये अभी भारत मे अस्थायी हैं। कई जगह देश के स्वास्थ्य सेवा मा स समय नहीं होने के कारण वैधिक स्तर संधी पैदा किया।

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीय संस्करण पर आधारित है।

मुख्य शब्द: कोरोना संकट, लॉकडाउन, दीनिक मजदूरी, काराखाने, बेरोजगारी।

Available online on – shikshansanshodhan.researchculturesociety.org
करोड़ लीटर दूध ही संग्रहित बाजार में आ पाते हैं बाकी चालीस फीसदी दूध यानी की बीस करोड़ लीटर दूध असंग्रहित क्षेत्रों में ही जाते हैं। दूध के कुछ उपयोग को छोड़कर अधिकतर उत्पादों का उपयोग बंद हैं जिससे दूध की कीमत गिरी है। दूध के किसानों को प्रतिदिन दो सी करोड़ का नुकसान हो रहा है। अनुमान है की पूरी तालाबबादी में करीब आठ हजार करोड़ का नुकसान होगा। दृष्टि से सम्बंधित दूसरे उत्पादों की कीमतों में कमी आई है। क्रिश्ना आय नकासार्त सर पर पहुंच गई है। करोना संकट से क्रिश्ना करोड़ बागमती बंदी के कारण पर है। इसके अलावा आई ओं के मुताबिक अनौपचारिक क्षेत्र की चालीसी क्रीडाआर्थिक इलाकों में काम करते हैं। आय यह आदर्श गंडी बेरोजगार रोजगार संकट का सामना कर रहे हैं। अगर कुछ नहीं हुआ तो ये गरीबी के दृष्टिकोण में फस जायेंगे जिसके गंडी परिणाम होंगे। भारत की सरकार चालीसी आदर्श गंडी मांगाहारी हैं और करीब दो करोड़ लीटर एन.पी.सी.सेंचमिय के भारत राज्यों के लिए पशु प्रदेश के साबित कर रही हैं। पॉल्ट्री किसान हर महीने दो किलो वजन वाले चालीसी करोड़ चिकन तेजपता करते हैं। किसानों के लिए उत्पादन लाफत असी रूपये किलो जब किसान अब दाम और फिर गया है। अवकाश और सर्कार के बीच इसका बाजार वित्तकुल बंद हो गया है। यह दिल्ली लोगों के कारण पर हैं। किसान मांस बेचने पर रोजगार में लगे हैं। पूरे रोजगार सामरिक हर महीने दो किोटा मजदूर लोग से संबंधित दूसरे उत्पादों में नुकसान हो रहा है। पॉल्ट्री अंग्रेजी के भारतीय आवासों में हेरारह नजर आई है। पॉल्ट्री किसान हर महीने दो किलो वजन वाले चालीसी करोड़ चिकन तेजपता करते हैं। किसानों के लिए उत्पादन लाफत असी रूपये किलो जब किसान अब दाम और फिर गया है। अवकाश और सर्कार के बीच इसका बाजार वित्तकुल बंद हो गया है। यह दिल्ली लोगों के कारण पर हैं। किसान मांस बेचने पर रोजगार में लगे हैं। पूरे रोजगार सामरिक हर महीने दो किोटा मजदूर लोग से संबंधित दूसरे उत्पादों में नुकसान हो रहा है। पॉल्ट्री अंग्रेजी के भारतीय आवासों में हेरारह नजर आई है।
संयुक्त राष्ट्र के अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन ने एक रिपोर्ट जारी की है, जिसके अंकड़े काफी चौकाने वाले हैं।

दरअसल, इस रिपोर्ट में कोरोना महामारी की वजह से पूरी दुनिया में हुई प्रारंभिक और विकास बुरी तरह से बाधित हुई है। इसमें कहा गया है कि इस महामारी द्वारा पीड़ितों की संख्या बढ़कर हज़ारों लोगों को नौकरी चौकाने वाले के दौरान दिखाया जा रहा है। इस महामारी ने करोड़ों लोगों की नौकरियाँ छीन ली है। बुधवार की जांच अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) की थी रिपोर्ट बताती है कि इस संकट से पूरी दुनिया में बेरोजगारों का संख्या बढ़कर 20 करोड़ 50 लाख हो जाएगी। इसकी वजह से गरीबों की संख्या में भी जबरदस्त वृद्धि होगी। इस रिपोर्ट का एक और चौकाने वाला तथ्य है कि वर्ष 2019 के मुकाबले, 1 करोड़ 80 लाख अतिरिक्त श्रमिक अब गरीब या बेहद गरीब की श्रेणी में आ गए हैं। संगठन का उन्नयन है कि वर्ष 2022 तक वैश्विक बेरोजगारी बढ़कर 20 करोड़ 50 लाख हो जाएगी, जो वर्ष 2019 की में 18 करोड़ 70 लाख थी। आईएलओ ने 164 पत्रों की ये रिपोर्ट विश्व रोजगार और सामाजिक परिवर्तन: स्वास्थ्य 2021 के नाम पर जारी की है। इस रिपोर्ट के मुताबिक अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाले करोड़ों महिलाओं, पुरुषों पर इसका विवाह कारण बढ़ाया है और समाज में असमानता की वजह भी बढ़ी है। रिपोर्ट के मुताबिक विश्व स्तर पर 2020 में रोजगार के अवसर की में लाख पूर्ण, यूरोप के लिए चार फिल्ड की गिरावट आई है। इस महामारी ने गरीबी की वजह से अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाले, दो अरब श्रमिकों की उबरने की आशा की है। दरअसल, इस रिपोर्ट का एक और चौकाने वाला तथ्य है कि दर 2020 में भारत में रोजगार के अनुमान है कि दरअसल 50 हज़ार हो जाएगी, जो दर 2019 की में 30 हज़ार था। आईएलओ ने 2.3 लाख कोरोना पीड़ितों के लिए आपूर्ति नौकरी पेश की है। इस महामारी की वजह से कई छोटे व्यवसाय बंद गए और लोगों का आर्थिक रूप से विभिन्न परेशानियों से जुड़ा हुआ है। वैश्विक संकट में पैदा करोड़ों लोगों की राह पसीली और जीवन की जितनी संख्या हो गई है, तथा जीवन और वातावरण के प्रति भी अनुभव का अंत हो गया। 2.3 लाख लोगों की राह पसीली और जीवन की जितनी संख्या हो गई है, तथा जीवन और वातावरण के प्रति भी अनुभव का अंत हो गया।

निष्कर्ष:

हम कह सकते हैं की आयाम तोरों ने संकट बुरी तरह से भारत में अपना घर बनाने की फ़िरक में है हालांकि सरकार, समाज के ज़मानक लोग और समाज की संस्थाएँ पूरी तरह से संकट से बचने हेतु प्रयास कर रही हैं दौरान कर और दूरी ही बढ़ती हैं के मूल मंत्र का पालन कर रही हैं और इनका उबरना भारतीय समाज की मजबूती के लिए अति आवश्यक भी है।

सन्दर्भ:

1. Hui, David S; Azhar, Esam E; Madani, Tariq A; Ntoumi, Francine; Kock, Richard; Dar, Osman; Ippolito, Giuseppe; Mchugh, Timothy D; Memish, Ziad A (14 January 2020) "The Continuing Epidemic Threat of Novel Coronavirus to Global Health – the latest novel coronavirus outbreak in Wuhan, China" International Journal of Infectious Diseases.


3. सरदार, विजय (2020)। अक्षयों और लाड़ाड़ान से भेहत पॉल्ट्री - डीरंग सेंटर, इडिया टुडे, 4 मई 2020.

4. दैनिक भारत (2020): अनुमानित मिसाल पर मजबूर न खरीद तो 9 अरब की किस्मी अग. 23 अप्रैल 2020.
